P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भरतपुर जिले के अभिवृद्धि केन्द्रों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाएं

बिनेश कुमारी
पूर्व शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
एम.एस.जे. कॉलेज,
भरतपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

किसी भी अभिवृद्धि केन्द्र का समीपवर्ती चारों ओर का प्रदेश आधारभूत सुविधाओं के लिये उस केन्द्र पर निर्भर करता है और ये समीपवर्ती क्षेत्र भी कुछ सेवाऐं उस केन्द्र को देता है। जैसे– भोजन, दुग्ध, साग–सब्जी, फल आदि। इस समीपवर्ती क्षेत्र से व्यवसायिक संस्थानों के लिए थोक व फुटकर व्यापारी औद्योगिक संस्थानों के लिए कार्यकर्ता व कच्चा माल प्राप्त करता है। कोई भी दो केन्द्र एक जैसे नहीं होते हैं हर एक की अपनी अलग–अलग विशेषताऐं होती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में अभिवृद्धि केन्द्रों के कार्यो का विश्लेषण किया गया है। जो कि महत्वपूर्ण है। क्योंकि किसी भी केन्द्र के आंतरिक पक्ष का सबसे मुख्य तथ्य उसके द्वारा किये जाने वाले कार्य ही हैं। कार्य किसी भी क्षेत्र के जीवन को चलाने वाली शक्ति हैं। जो उसके विकास व स्वरूप पर विस्तृत प्रभाव डालते हैं। किसी भी केन्द्र के कार्यो के विश्लेषण के आधार पर उस केन्द्र की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचनाओं तथा व्यवस्थाओं का अवलोकन होता है। किसी भी केन्द्र में रहने वाली जनसंख्या व उसके समीपी क्षेत्र में रहने वाली जनसंख्या का सम्बन्ध उन समस्त आधारभूत सुविधाओं से होता है। जो कि वहाँ उपलब्ध है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्येक अभिवृद्धि केन्द्र अपने चारों ओर के क्षेत्र से गहरा सम्बन्ध रखता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा भरतपुर जिले के अभिवृद्धि केन्द्रो में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं पर प्रकाश डाला गया है। क्षेत्र के समुचित विकास को ध्यान में रखते हुए आवश्यक केन्द्रों पर आवश्यक आधारभूत सुविधाओं को विकसित किया गया है। जिसका लाभ वहाँ निवास करने वाले लोग उठा रहे हैं।

मुख्य शब्द : अभिवृद्धि केन्द्र, आधारभूत सुविधायें, अभिगम्यता।

प्रस्तावना

किसी भी अभिवृद्धि केन्द्र पर उपलब्ध आधारभूत सुविधायें वहाँ के समीपवर्ती क्षेत्र के लोगों को सेवा प्रदान करती हैं। ये केन्द्र परिवहन के मार्गो द्वारा अपने समीपी क्षेत्र से जुड़े होते हैं। ये केन्द्र वास्तव में अपने चारों ओर फैले निर्भर समीपवर्ती क्षेत्र के लिए आकर्षण केन्द्र के रूप में होते हैं। ये समीपवर्ती क्षेत्र वास्तव में ग्रामीण क्षेत्र होता है। और यह केन्द्र प्राथमिक रू‍प से इसी समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करने के लिए ही जन्म लेते हैं। ये अपने पड़ोसी क्षेत्रों को सुविधाएंप्रदान करने के लिऐ सदैव तत्पर रहते हैं। एक केन्द्र अपने समीपवर्ती कितनी दूर तक के क्षेत्र पर प्रभाव डाल पाता है, यह उसके कार्यिक स्तर व आकार पर निर्भर करता है यदि केन्द्र छोटा है व कम सुविधाएंरखता है तो उसका निर्भर क्षेत्र भी कम विस्तृत होता है और यदि केन्द्र बड़ा है व अधिक सुविधाएंरखता है तो उसके निर्भर क्षेत्र भी अधिक विस्तृत होता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में भी शोधार्थी द्वारा भरतपुर जिले के अभिवृद्धि केन्द्रों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं पर प्रकाश डाला गया है कि किस केन्द्र पर कौनसी व कितनी संख्या में आधारभूत सुविधाएंमौजूद हैं और किस केन्द्र पर कौनसी सुविधा के विकास की आवश्यकता है ताकि समूचे क्षेत्र का सन्तुलित विकास हो सकें।

अध्ययन की समस्या एवं उद्देश्य

1. अभिवृद्धि केन्द्रों के विकास पर आधारभूत सुविधाओं के प्रभाव को बताया गया है।
2. अध्ययन क्षेत्र के समुचित विकास के लिए आधारभूत सुविधाओं के विकास पर जोर दिया गया है।

साहित्यावलोकन

नीरज चौहान ने सन् 2003 में डॉ. एम.के. खण्डेलवाल के निर्देशन में "बीकानेर जिले में नगरीय अभिवृद्धि केन्द्रों के विकास का भौगोलिक अध्ययन" विषय पर कार्य किया।

एम.आर. वर्मा ने सन् 2004 में 'जयपुर जिले में अभिवृद्धि केन्द्रो का अध्ययन' विषय पर कार्य किया है।

ए. गीता रेड्डी ने सन् 2011 में 'Urban Growth Theories and Settlement System in India' में अधिवासों के प्रारूपों पर प्रकाश डाला गया है।

एम.जे. मोजले द्वारा सन् 2013 में पुस्तक 'Growths centres in spatial planning' में स्थानीय नियोजन में अभिवृद्धि केन्द्रों के महत्व पर प्रकाश डाला है।

फ्लांग डब्लू यू द्वारा सन् 2015 में पुस्तक 'Planning for Grwoth : Urban and Regional Planning in China' में प्रादेशिक नियोजक पर प्रकाश डाला गया है।

अशोक कुमार द्वारा सन् 2016 में पुस्तक 'Urban and Regional Planning Education' में प्रादेशिक नियोजन पर प्रकाश डाला गया है।

ऊषा वर्मा, अनुराधा सहाय, वी.पी.एन. सिन्हा द्वारा सन् 2017 में पुस्तक 'Introduction to Settlement Geography' का शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में सहयोग लिया गया है।

परिकल्पनाऐं

1. किसी क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं में वृद्धि के साथ विकास का स्तर बढ़ता है।
2. आधारभूत सुविधाओं के विकास के साथ अभिवृद्धि केन्द्रों का विकास होता है।

शोध रूपरेखा

प्रस्तुत शोध पत्र में आंकड़ों के स्रोत एवं विधितंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र के सभी प्राथमिक आंकड़ों को शोधार्थी द्वारा सम्बन्धित विभागों से एकत्रित किया गया है।

भरतपुर जिले के अभिवृद्धि केन्द्रों में निम्नलिखित आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं–

शैक्षणिक सुविधाएं

किसी भी क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण कारक है। जिस क्षेत्र का शिक्षा का स्तर उच्च होता है वह विकास में भी अग्रणी स्थान रखता है। प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों के उपयोग के लिए शिक्षा अहम् भूमिका निभाती है।

विकास चाहे किसी भी क्षेत्र में हो शिक्षा का महत्व प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देता है। शिक्षा के बिना सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक किसी भी क्षेत्र का विकास सम्भव नहीं है। आज जो क्षेत्र शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए हैं वहाँ विकास का निम्न स्तर पाया जाता है। शिक्षा किसी भी प्रदेश के विकास की 'रीढ़' कही जाती है। केन्द्र एवं राज्य सरकार भी शिक्षा के उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाऐं चलाती है। जिनका उद्देश्य क्षेत्र का समग्र विकास एवं जन जागरूकता लाना है।

अध्ययन क्षेत्र भरतपुर जिले में जनगणना 2011 के आँकडों के अनुसार साक्षरता दर 70.11 प्रतिशत है। जो राज्य साक्षरता दर 66.11 प्रतिशत से अधिक है। जिले की साक्षरता दर में राज्य की साक्षरता दर से 4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र की शैक्षणिक स्थिति राज्य की तुलना में बेहतर है।

वर्तमान में अध्ययन क्षेत्र भरतपुर जिले में 1372 प्राथमिक विद्यालय, 1423 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 691 माध्यमिक विद्यालय 444 उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं 73 महाविद्यालय मौजूद हैं। शोधार्थी द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर अध्ययन द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार स्पष्ट हुआ है कि जिले में उक्त शिक्षण संस्थानों का क्षेत्रीय वितरण असमान है। कुछ स्थानों पर शिक्षण संस्थाओं का बाहुल्य है जबकि कुछ स्थानों पर इनकी संख्या काफी कम है। नीचे दी गई तालिका में भरतपुर जिले के अभिवृद्धि केन्द्रों पर स्थित शैक्षणिक संस्थानों का विवरण दर्शाया गया है।

तालिका

अभिवृद्धि केन्द्रों के अनुसार शैक्षणिक सुविधाएं

क्र.सं.	केन्द्र का नाम	बस्तियों की कुल संख्या	प्राथमिक विद्यालय	उच्च प्राथ. विद्यालय	माध्यमिक विद्यालय	उच्च मा0 विद्यालय	महाविद्यालय
1.	नदबई	123	2	15	18	13	5
2.	कुम्हेर	130	9	18	5	8	7
3.	डीग	132	14	33	10	12	3
4.	नगर	164	3	17	3	15	5
5.	रूपवास	162	4	12	14	14	2
6.	कामां	127	5	21	12	9	3
7.	वैर	153	13	10	12	14	3
8.	बयाना	197	4	23	13	8	7

उक्त तालिका के अनुसार कुम्हेर, बयाना, नदबई एवं नगर उच्च शिक्षा की दृष्टि से अग्रणी है। जबकि रूपवास उच्च शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की दृष्टि से नदबई, रूपवास व वैर अग्रणी हैं। जबकि कुम्हेर इस दृष्टि से पिछड़ा हुआ है।

स्वास्थ्य सुविधाएं

किसी भी क्षेत्र की उन्नति एवं विकास वहाँ पर निवास करने वाले लोगों के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है

स्वास्थ्य का स्तर क्षेत्र की उत्पादकता एवं कार्यकुशलता को प्रभावित करता है जिस क्षेत्र का स्वास्थ्य का स्तर उच्च पाया जाता है वहाँ की उत्पादकता एवं कार्यकुशलता अधिक पाई जाती है, जो क्षेत्र स्वास्थ्य की दृष्टि से पिछड़ा पाया जाता है वहाँ की कार्यकुशलता एवं उत्पादकता क्षमता कम पाई जाती है।

स्वास्थ्य का जीवन में बहुत महत्व है। जैसा कि कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। मानव विकास सूचकांक की दृष्टि से स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण आधार है। जिस क्षेत्र में स्वास्थ्य सम्बंधी सुविधा अच्छी होती है वहाँ मानव विकास सूचकांक का मान अधिक आता है तथा वे क्षेत्र मानव विकास की दृष्टि से विकसित माने जाते हैं। अतः स्पष्टतः कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य सुविधायें किसी क्षेत्र के विकास को प्रभावित करती हैं।

अध्ययन क्षेत्र भरतपुर जिले में स्वास्थ्य की स्थिति संतोषजनक कही जा सकती है। वर्ष 2011 के आँकड़ों के अनुसार जिले में 70 हॉस्पिटल, 65 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं 407 प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र विद्यमान है। जिले में इनका वितरण असमान है। अधिकांश हॉस्पिटल की सुविधा भरतपुर शहर के आस–पास विद्यमान है। जिले के अभिवृद्धि केन्द्रों में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका– अभिवृद्धि केन्द्रों के अनुसार स्वास्थ्य सुविधाएं

क्र.सं.	केन्द्र का नाम	बस्तियों की संख्या	डिस्पेंसरी	प्राथमिक स्वा. केन्द्र	प्राथमिक स्वा. उपकेन्द्र	हॉस्पिटल	मैटरनिटी होम
1.	नदबई	123	12	5	42	1	1
2.	कुम्हेर	130	13	10	59	2	2
3.	डीग	132	6	5	36	2	2
4.	नगर	164	9	8	47	3	3
5.	रूपवास	162	26	3	48	3	2
6.	कामां	127	7	7	43	2	1
7.	वैर	153	33	14	45	2	1
8.	बयाना	197	11	7	48	2	2

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जिले के पूर्व में स्थित कुम्हेर एवं दक्षिण–पश्चिम में स्थित वैर क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र व प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्रों की संख्या अधिक हे। मैटरनिटी होम एवं हॉस्पिटल की सुविधा भी जिले के प्रत्येक अभिवृद्धि केन्द्र पर देखने को मिलती है।

अभिगम्यता

किसी भी क्षेत्र के विकास में अभिगम्यता में यातायात नेटवर्क की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसलिए इसे क्षेत्र के विकास की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है। क्षेत्र के आर्थिक विकास की यातायात नेटवर्क के बिना कल्पना नहीं की जा सकती। सम्पूर्ण क्षेत्र के अन्तर्सम्बंधों को स्थापित करने एवं समग्र विकास के लिए यातायात एक महत्वपूर्ण कारक होता है।

परिवहन एवं व्यापार विभिन्न प्रदेशों के मध्य आर्थिक अर्न्तसम्बंध के प्रतीक है। किसी प्रदेश युगल के परस्पर आर्थिक कार्यात्मक अर्न्तसम्बंध का स्तर उन्हें संबंधित करने वाले परिवहन साधनों की क्षमता तथा पारस्परिक व्यापार के परिमाण में परिलक्षित होता है। विभिन्न प्रदेशों के मध्य इस प्रकार का आर्थिक अर्न्तसम्बंध स्थापित होना अनिवार्य है क्योंकि कोई स्थान, क्षेत्र अथवा प्रदेश एकाकी नहीं रह सकता। इसका मूल कारण यही है कि पृथ्वीतल पर सभी तत्व एकत्रित नहीं मिलते वरन् विभिन्न तत्व भिन्न–भिन्न स्थानों पर उपलब्ध होते हैं। किसी भी प्राकृतिक, जैविक अथवा मानवीय (सामाजिक) तत्व का एकल अथवा सामूहिक रूप में भूतल पर असमान वितरण उसी प्रकार अवश्यम्भावी है, जिस प्रकार विभिन्न घटनाओं का भिन्न–भिन्न समय पर घटित होना। तत्वों के परस्पर अर्न्तसम्बंध की दशाओं तथा स्तर में भी क्षेत्रीय असमानता मिलती है।

आर्थिक स्तर पर भी, भूतल पर उत्पादन तथा उपभोग स्थलों का एकमेव होना असम्भव है। मानव इतिहास के अति प्रारम्भिक काल में भी जब मानव के आर्थिक कार्य–कलाप उदर पोषण तक ही सीमित थे, मनुष्य को वन्य वस्तु संग्रह अथवा आखेट हेतु अपनी गुफा से निकल कर खाद्य प्राप्ति स्थल तक जाना पड़ता था। यदि वह खाद्य प्राप्ति के स्थल पर ही अपनी उदर–पूर्ति कर भी ले, तब भी अपने बाल–बच्चों हेतु अथवा तात्कालिक आवश्यकता के अतिरिक्त खाद्य वस्तु को भविष्य के लिए संग्रहीत करने की इच्छा से प्रेरित, खाद्य सामग्री को निवास तक पहुँचाने की समस्या उसके सामने उपस्थित होती थी। इस प्रकार वस्तुओं का स्थानान्तरण भी मनुष्य की मौलिक आवश्यकता रही है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए जीन ब्रून्स ने अधिवास स्थल तथा इसको उत्पादन स्थल से सम्बंधित करने वाले परिवहन मार्गों को मानव भूगोल के मूलभूत तत्वों की श्रेणी में प्रतिष्ठित किया। चूंकि उत्पादन तथा उपभोग स्थलों का विलग होना अपरिहार्य है तथा इस विलगाव को समाप्त करने अर्थात् इनके क्षेत्रीय अन्तराल को पाटने का कार्य परिवहन द्वारा सम्पन्न होता है, अतएव अर्थशास्त्री भी इन्हें "उत्पादन" का तत्व मानते है। स्पष्ट है कि आर्थिक विकास क्रम में परिवहन तकनीक एक प्रबल अंकुश रहा है। जब भी परिवहन तकनीक में प्रभावकारी परिष्कार हुए हैं, तभी आर्थिक विकास की गति में अभिवृद्धि भी संभव हो सकी है।

आर्थिक तंत्र के प्रत्येक अवयव में परिवहन तन्त्र शिराओं की तरह विस्तृत होते हैं, जिनमें व्यापारिक

यातायात रूपी प्राणदायिनी शक्ति प्रवाहित होती है। अतः किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास नियोजन में परिवहन तन्त्र समायोजन प्राथमिक महत्व पाता है। आर्थिक विकास हेतु प्रादेशिक नियोजन का लक्ष्य ऐसे उत्पादन संश्लिष्टों का निर्माण करना होता है, जिनमें संसाधनों का समन्वित एवं सम्यक् उपयोग सम्भव हो सके। इस प्रकार के उत्पादन संश्लिष्टों का निर्माण तथा विकास एवं आर्थिक तन्त्र के विभिन्न क्षेत्रों में बिखरे उत्पादन तत्व जैसे– कृषि, वन, खनिज, उद्योग, ग्रामीण एवं नगरीय अधिवास आदि के विभिन्न अनुप्रस्थ एवं उर्ध्वाधर स्तरों पर क्षेत्रीय समायोजन तथा कार्यात्मक समन्वयन का प्रधान सूत्र परिवहन है।

यद्यपि भरतपुर जिले में एक अच्छा यातायात तंत्र स्थापित है। यहाँ रोड़ एवं रेलवे नेटवर्क सम्पूर्ण जिले में फैला हुआ है। जिले में अभिवृद्धि केन्द्रों में उपलब्ध बस एवं रेल अभिगम्यता को नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका– अभिवृद्धि केन्द्रों के अनुसार अभिगम्यता

क्र.सं.	केन्द्र का नाम	बस्तियों की संख्या	बस स्टैण्ड से दूरी के अनुसार बस्तियों का प्रतिशत			रेलवे स्टेशन से दूरी के अनुसार बस्तियों का प्रतिशत		
			0–5	5–10	10 से अधिक	0–5	5–10	10 से अधिक
1.	नदबई	123	57.72	23.58	18.70	17.07	44.72	38.21
2.	कुम्हेर	130	50.77	23.08	26.15	20.00	28.46	51.54
3.	डीग	132	55.30	25.00	19.70	12.12	79.55	08.33
4.	नगर	164	62.19	31.71	06.10	15.24	30.49	54.27
5.	रूपवास	162	60.49	19.14	20.37	23.46	20.99	55.55
6.	कामां	127	40.94	22.05	37.01	08.66	25.20	66.14
7.	वैर	153	39.22	31.37	29.41	00.00	10.47	89.54
8.	बयाना	197	39.09	21.32	39.59	25.38	33.00	41.62

उपर्युक्त तालिका में अभिवृद्धि केन्द्रों के अनुसार बस्तियों की अभिगम्यता को दर्शाया गया है। नगर, रूपवास एवं नदबई में बस सेवा के द्वारा बस्तियों की अभिगम्यता उच्च स्तरीय है। जहाँ क्रमशः 62.79, 60.49 व 57.72 प्रतिशत बस्तियों को 5 कि.मी. से कम दूरी पर बस सेवा उपलब्ध है जबकि बयाना व कामां में बस्तियों की बस सुविधा से पहुँच अपेक्षाकृत कम है यहाँ 35 से 40 प्रतिशत बस्तियों को 10 कि.मी. से अधिक दूरी पर बस सुविधा उपलब्ध है।

इसी प्रकार उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बयाना, रूपवास व कुम्हेर में बस्तियों की रेल द्वारा अभिगम्यता अधिक है, यहाँ क्रमशः 25.38, 23.46 व 20.00 प्रतिशत बस्तियों को 5 कि.मी. से कम दूरी पर रेल सुविधा उपलब्ध है जबकि वैर व कामां में 60 प्रतिशत से अधिक बस्तियाँ रेलवे स्टेशन से 10 कि.मी. से अधिक दूर है।

निष्कर्ष

शोधार्थी द्वारा किये गये अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भरतपुर जिले में अच्छा यातयात तंत्र स्थापित है। शोधार्थी द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर प्राप्त जानकारी के अनुसार स्पष्ट हुआ है कि जिले में शिक्षण संस्थानों का क्षेत्रीय वितरण असमान है। कुछ स्थानों पर शिक्षण संस्थानों का बाहुल्य है जबकि कुछ स्थानों पर इनका संख्या बहुत कम है। अध्ययन क्षेत्र भरतपुर जिले में स्वास्थ्य सम्बंधी सुविधाएंबेहतर पायी गई है। जिसका लाभ यहाँ निवास करने वाली समस्त जनसंख्या को प्राप्त हो रहा है।

सुझाव

शोधार्थी द्वारा किये गये अध्ययन के आधार पर यह सुझाव दिया जाता है कि क्षेत्र के समुचित एवं संतुलित विकास को ध्यान में रखते हुए आवश्यक क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं के विकास पर ध्यान दिया जाये ताकि क्षेत्र का समुचित विकास संभव हो सके।

अध्ययन क्षेत्र में जिन सुविधाओं के वितरण में असमानता है उस पर ध्यान दिया जाये और जिन क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं की कमी है उनको विकसित किया जाये। जिससे सम्पूर्ण जिले का सन्तुलित विकास हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

A. Geeta Reddy (2011) 'Urban Growth theories and Settlement System in India.'

Bansal, S.C.(2004)'Urban Geography'

Boundeville, J.R. (1996) 'Problem of Regional Economic Planning. Edinburg: Edinburg University press.'

Dickison, R.E. (1960) "City Region & Regionalsim," P. 94

Reilly, W.J.(1931) The Law of Retail gravition, The Knickerbocker Press, New York

Jonnson, L. J. (1958) "The Spatial Uniformity of a central place distribution in new England", Economic Geopgraphy, Vol, 34 P. 304

Jefferson, M. (1931) A Study in comparative civilization, Geographical Review, Vol. XXI P. 453

Son, L.K. & other (1981) Transport sense in India, Calcutta, P.13-14.

Mishra, R. N. (1981) "Banswara District- A study of Habitat", Ph.D. Thesis, University of Rajasthan, Jaipur

Neeraj Chauhan (2003) "बीकानेर जिले में नगरीय अभिवृद्धि केन्द्रों के विकास का भौगोलिक अध्ययन"

M.R.Verma(2004) 'जयपुर जिले में अभिवृद्धि केन्द्रों का अध्ययन'

M.J. Moseley (2013) 'Growth Centres in Spatial Planning.'

Fulong W.U. (2015) 'Planning for Growth : Urban and Regional Planning in China.'

Ashok Kumar (2016) 'Urban and Regional Planning Education.'

Usha Varma, Anuradha Sahay, V.P.N. Sinha (2017) 'Introduction to Settlement Geography.'